कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन,समस्या समाधान योग्यता एवम् शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन विषय से पी.एच.डी उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधकत्री

सिमलेश शर्मा

पर्यवेक्षक

डॉ. कल्पना गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन विभाग, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट,(डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग,आगरा 282005

2022

1.0.0 प्रस्तावना

भारत एक विकासशील देश होने के साथ ही घनी आबादी वाला देश भी है।यहां की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का जीवन कृषि पर आधारित है।वे खेती करके अपना जीवनयापन करते हैं। ऐसी आर्थिक स्थिति में गरीब और पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियो को शिक्षा के अवसर भी कम मिलते हैं। सभी विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर देने हेतु सरकार ने सभी वर्गों के विद्यार्थियों के लिए नि:शुल्क एवम् अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की है। अगस्त 2004 मे अभियान शुरू कर अभिभावकों को जागरूक किया जा रहा है,कि वह अपने बालकों को शिक्षा अवश्य दिलाएं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सरकार द्वारा कई ऐसे अभियान और योजनाएं भी चलाए जा रही हैं। जैसे-शिक्षित भारत उन्नत भारत,सर्वशिक्षा अभियान,"शिक्षा का अधिकार अधिनियम(2009)"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी कई योजनाएं संचालित है जिसके अन्तर्गत सभी वर्गों के लिए शिक्षा नि:शुल्क एवं अनिवार्य दी जाती है।कक्षा छ ,सात और आठ की छात्राओं को नि:शुल्क शिक्षा, पाठ्य सामग्री, वेषभूषा और छात्रवृति दी जाती है।जिससे सभी वर्गों के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।विषेश रूप से आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए यह सुविधा पहुंचाना ही सरकार का मुख्य उद्देश्य है ऐसी छात्राएं जो इच्छुक होते हुए भी विद्यालयों में नहीं जा रही किसी कारण से उनका नामांकन नहीं हो रहा है या बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर चली जाती हैं।अधुरी पढ़ाई छोड़कर जाने वाली छात्राओं का प्रतिशत भी अधिक है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में छात्र- छात्राएं गुरु के आश्रम में ही रहकर शिक्षा लेते थे। शिक्षक छात्र के संबंध पिता-पुत्र के समान होते थे।वर्तमान में आश्रम का स्थान छात्रावास परिसर अथवा आवासीय विद्यालयों ने ले लिया है। दिवसीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रतिदिन विद्यालय में आते हैं और विद्यालय के समय-सारिणी के अनुसार कक्षाएं लेने के पश्चात पुन: अपने घर वापस चले जाते हैं।इस प्रकार से वह अपने सत्र में संचालित प्रक्रिया पूरी करते हैं।इस प्रकार भारत में प्राथमिक,माध्यमिक और उच्च स्तर की शिक्षा व्यवस्थाएं संचालित की जा रही हैं।

कोठारी आयोग (1964-66) ने कहा है कि "भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।"शिक्षा के माध्यम से छात्राओं को उनकी कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा उन्हें एक अच्छा नागरिक बनाने के साथ ही डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, शिक्षक, सेनानी, आदि बनाने में अहम भूमिका होती है। वॉटसन एक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक थे उन्होंने अपने अध्ययन में कहा है, कि तुम मुझे एक बालक दे दो,मैं उसे डॉ.वकील, इंजीनियर, तुम जो चाहो बना सकता हूं।इस प्रकार से छात्राओं की शैक्षिक प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान है।पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाली छात्राओं को भी समान अवसर की प्राप्ति होती। सभी क्षेत्रों में महिलाएं पुरुष के समान ही कार्य करने में सक्षम हैं।देश में सभी क्षेत्र में महिलाएं शिक्षा के कारण ही समायोजन, समान अवसर,विभिन्न पदक जीत सकती हैं,समस्याओं का समाधान कर रहीं हैं,विभिन्न पदों पर आसीन हैं।शैक्षिक अनुसंधान में भी बड़ा योगदान रहा है।

फ्रोबेल (1981).के अनुसार “शिक्षा एक प्रक्रिया है,जिसके द्वारा बालक अपनी अन्य: शक्तियों को प्रकट करता है

रवींद्रनाथ टैगोर,(1981).के अनुसार सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएं ही नहीं देती अपितु हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में तालमेल स्थापित करती है।

व्यक्ति हर समय सीखता रहता है।विद्यालयों में औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक माध्यम से सिखाया जाता है।औपचारिक शिक्षा हेतु सरकारी विद्यालय,गैर सरकारी विद्यालय और निजी विद्यालयों की स्थापना की गई है।इनमें संचालित पाठ्यक्रमों और पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा शिक्षा दी जाती है।जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है।

शिक्षा के अधिकार के तहत 6-14 आयु वर्ग के सभी विद्यार्थियों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।सर्व शिक्षा अभियान का प्रारम्भ सन् 2001 के अंतर्गत ही सन(2004) में शैक्षिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाली छात्राओं के लिए शिक्षा के समान अवसर देने हेतु प्रयास किए गए हैं।सुदूर क्षेत्रों से विद्यालयों में आने वाली छात्राओं की कठिनाइयों को देखते हुए जिन क्षेत्रों में विद्यालय की व्यवस्था नहीं है उन क्षेत्रों में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों की स्थापना की गई है।वर्तमान में 771(के.जी.बी.वी)

संचालित हैं।छात्राओं की प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान करने एवम् सुरक्षा हेतु इन विद्यालयों की स्थापना की गई है।सभी वर्गों की छात्राओं को विद्यालय में नि:शुल्क भोजन, पानी,आवास, चिकित्सा, पठन- पाठन सामग्री, व्यावसायिक प्रशिक्षण और खेल कूद पर किया जाने वाला खर्च भी सरकार द्वारा वहन किया जाता है। इस प्रकार से छात्राओं को विशिष्ट प्रतिभाओं में प्रदर्शन करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

इन विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य अनुसूचित जाति,अनुसूचित जनजाति,ओ.बी.सी,अल्पसंख्यक और गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली छात्राओं को उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रवेश देने हेतु की गई है।ये बालिकाएं भी कक्षा छह में प्रवेश लेने के पश्चात कक्षा आठ तक की पढ़ाई विद्यालय में रहकर नि:शुल्क कर सकती हैं।कुछ क्षेत्रों में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय कक्षा दस तक संचालित किए जा रहे हैं।सरकार उन्हें कक्षा बारह तक ले जाने का प्रयास कर रही है।जिससे बालिकाओं के सामने कक्षा आठ से आगे पढ़ाई के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का अभिप्राय सरकार द्वारा चलाए जा रहे सर्वशिक्षा अभियान के तहत बालिकाओं की शिक्षा हेतु नि:शुल्क एवम् अनिवार्य शिक्षा के साथ ही साथ भोजन, पानी, आवास, चिकित्सा, स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं को भी उपलब्ध कराना है।भारत देश में तीन हजार सात सौ तीन कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।जिसमें सुविधा वंचित वर्ग की छात्राओं को शिक्षा का लाभ मिल सके।इन विद्यालयों में शिक्षा का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के अंतर को कम करना है।प्राथमिक शिक्षा में भी उच्च प्राथमिक स्तर पर अधिक से अधिक नामांकन, सुविधा बंचित वर्ग की छात्राओं को शिक्षा प्रदान कर वंचित वर्ग के समाज को ऊपर उठाना है।सर्वशिक्षा अभियान के तहत सहायक जिला परियोजना अधिकारी अमित देवगढ़ ने बताया है कि इन विद्यालयों को कक्षा आठ से अब कक्षा बारहवीं तक करने की योजना बनाई जा रही है।जिसके लिए विद्यालयों से रिपोर्ट मांगी गई है।ताकि स्कूलों में छात्राओं को प्रवेश दिया जा सके।कक्षा छह से आठ तक की शिक्षा उच्च प्राथमिक स्तर के अन्तर्गत आती है ।

आगरा जिले के प्रत्येक ब्लॉक में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।फतेहाबाद ब्लॉक के आवासीय विद्यालय गांव कुमारिया में कक्षा दस व बारह के विद्यार्थियों की शिक्षा दी जा रही है। यशपाल समिति ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय में दी गई सन् 1993 रिपोर्ट में कहा है कि "बिना बोझ सीखना" एन. एन. सी. एफ. (2005) ने भी पाठ्यक्रम में भार की समस्या को भी संदर्भित किया है कि बालकों की शिक्षा में बस्ते के बोझ को कम किया जाना चाहिए। साथ ही अनेक अन्य कारणों से होने वाली घटनाओं को लेकर भी अथक प्रयास किए जाते हैं।

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त दिवसीय बालिका विद्यालयों से तात्पर्य वे विद्यालय है जहां-छात्राएं प्रतिदिन शिक्षा प्राप्त करने के लिए घर से विद्यालय आते हैं और विद्यालय के समय और नियम के अनुसार वापस अपने घर चले जाते हैं।जिसमें सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में से कोई भी हो सकता है।निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएं शुल्क देकर ही शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं।

1.1.1 समायोजन के अन्तर्गत हम सामाजिक समायोजन,शैक्षिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, भावनात्मक समायोजन,वातावरणीय समायोजन का अध्ययन विशेष रूप से करते हैं जब कभी इनके सन्तुलन में कमी आ जाती है तब व्यक्ति को संघर्ष का सामना करना पड़ता है।जब व्यक्ति सामान्य जीवन में आने वाली कठिनाईयों व परिस्थिति में भी संतुलन बनाए रखता है तब वह समायोजन कहलाता है। समायोजन की आवश्यकता से सम्बन्धित क्षेत्र जैसे -व्यक्तिगत,सामाजिक,आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली परिस्थितियों में होने वाली कठिनाइयों व परिवर्तनों के साथ सामंजस्य व अनुकूलन स्थापित कर लेना ही समायोजन कहलाता है

फ्रोकन एवं बासर्ड,(2001).के अनुसार किशोरों की स्वविचारधारा,सामाजिक समायोजान को प्रभावित करती है।सामाजिक समायोजन लेबरमेन,(2005).के अध्ययन अनुसार प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं सामर्थ्य प्रदान करने वाले परिवारों के किशोर अपनी मित्रता में अधिक प्रदान करने वाले परिवारों के किशोर अपनी मित्रता में अधिक साकारात्मक समायोजन प्रदर्शित करते हैं। मित्रता का प्रत्यय भिन्न भिन्न होता है।एक व्यक्ति समाज के अन्य

व्यक्तियों के साथ अनुकूलित संबंध स्थापित करने,परिवार ,मित्र और अन्य सम्बन्धित सदस्यों के साथ मधुर संबंध स्थापित करने,तथा संघर्षमय परिस्थितियों में भी शारीरिक,मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुलन स्थपित करना ही सामाजिक समयोजन कहलाता है।सामाजिक समायोजन डोरमैन,(2004).के अनुसार"किशोर के विकासात्मक पक्ष के कार्यों में सामाजिक विकास भी सम्मिलित रहता है।बालक के द्वारा किए जाने वाले कार्यों में सामाजिक समायोजन भी देखा जाता है जैसे वह अपने जीवन में कई सामाजिक हित में कार्य करता है, सामाजिक कर्तव्यों हेतु तत्पर रहना, अन्य व्यक्ति विशेष की सहायतार्थ कार्य करना आदि।शैक्षिक समायोजन जैकसक,(2004).के अध्ययन अनुसार शिक्षक और छात्रों का परस्पर संबंध अधिक मात्रा में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। शिक्षक और छात्रों के मधुर संबंध शैक्षिक वातावरण को अधिक उन्नत बनाते हैं।स्वतंत्र रूप से रखे गए विचार सीखने में साकारात्मक प्रभाव डालते हैं।मंगल,(2006).ने माता-पिता,स्कूल और विद्यालय सहकर्मी समूह द्वारा सभी एक व्यक्ति को समायोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पूर्व शोधों से पता चला है कि किसी व्यक्ति का समायोजन लिंग तनाव स्तर, चिंता स्तर,व्यक्तित्व ((अंतर्मुखी - बहिर्मुखी,)घर के वातावरण आदि पर निर्भर करता है।शैक्षिक उपलब्धि भी उनमें से एक महत्वपूर्ण कारक है जिसका समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है है।भावनात्मक समायोजन कीसे,(2004).के अनुसार "जो युवा विभिन्न समूहों एवं सामाजिक संगठनों से जुड़े होते हैं उनमें कम सामाजिक युवाओं की अपेक्षा अधिक नैतिक मूल्यों एवं निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में सहयोगी होते है। "भावनात्मक समायोजन जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं,संवेगों,और भावनाओं पर नियंत्रण करके सही समय पर सही संवेगों को व्यक्त करता है, तब उसे भावनात्मक समायोजन कहा जाता है- जैसे हंसना, रोना, गाना, क्रोध करना, खुशी व्यक्त करना आदि में सही सामंजस्य स्थापित करना समायोजन है।

1.1.2 समस्या समाधान योग्यता का तात्पर्य

लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों से उत्पन्न बाधाओं को समस्या कहते हैं, समस्या सामान्य भी हो सकती है और किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित भी हो सकती है। व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक,

व्यावसायिक,पारिवारिक या वातावरण संबंधी क्षेत्रों से संबंधित कठिनाइयों को समस्या कहते हैं।इन सभी कठिनाइयों से उत्पन्न समस्याओं को अपनी योग्यता, समझ, सूझ-बूझ और निर्देशन से हल कर लेना ही समस्या समाधान योग्यता कहलाती है।समस्या समाधान योग्यता से छात्राओं को अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक आदि सभी, क्षेत्र से संबंधित समाधान कर सकते है।

सौत्रांके,(2005) के"जब लक्ष्य के मार्ग में व्यवधान होता है तब उसे उचित उपाय द्वारा व्यवधान को दूर कर लक्ष्य को प्राप्त करना ही समस्या समाधान योग्यता कहलाता है।"समस्या समाधान वह ढांचा है जिससे व्यक्ति के अंतर्निहित तर्क शक्ति, खोजबीन और सृजनात्मक चिंतन की सहायता से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में होने वाली समस्याओं का समाधान करता है।या हल करने के अधिकतम प्रयास करता है साथ ही साथ पूर्व अनुमान, पूर्व अनुभवों, भाषा, वैज्ञानिक विधियों, तकनीकियों के आधार पर लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली बाधाओं को दूर करता है और सफल होने का प्रयास करता रहता है।

आइजेनिक,(1972).ने कहा है कि "समस्या समाधान वह प्रक्रिया है जिसमें प्राथमिक (ज्ञानात्मक) परिस्थितियों से प्रारम्भ कर इच्छित लक्ष्य तक पंहुचना अपेक्षित है।"

स्किनर,(1968)ने कहा है कि **"**समस्या समाधान किसी लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा डालती प्रतीत कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया है।यह बाधाओं के बावजूद सामंजस्य करने की विधि है।"

व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली कठिनाई पर विजय प्राप्त कर लेना या असंतुलन की स्थिति में संतुलन बना लेना,विषम परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित कर लेना ही समायोजन कहलाता है।जब कभी छात्र छात्राओं की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने पर भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ले उसे भी समायोजन कहा जाता है।

1.1.3 शैक्षिक उपलब्धि का अभिप्राय

मिश्रा,डॉ. करुणाशंकर,(1984) ने "शैक्षिक उपलब्धि किसी प्रमापीकृत उपलब्धि परीक्षण पर व्यक्ति के द्वारा प्राप्त किए गए प्राप्तांको से है।इस प्रकार से शैक्षिक उपलब्धि का अभिप्राय कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा वार्षिक परीक्षा में प्राप्त किए गए प्राप्तांको के समग्र योग से है।"

इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में प्रवेश के पश्चात सत्र में पाठ्यक्रम और पाठ्य-सहगामी क्रियाओं से संबंधित गतिविधियों में प्राप्त किए गए अंकों व उपलब्धियों को शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है।व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि भिन्न-भिन्न होती है। इसी आधार पर उच्च,मध्य, निम्न और असफल विद्यार्थियों को वर्गीकृत किया जाता है तथा असफल होने पर अगली कक्षा में प्रवेश नहीं दिया जाता उन्हें पुन: परीक्षा देने के अवसर प्रदान किए जाते हैं।

1.2.0 अध्ययन की आवश्यकताएं

विद्यार्थियों को परिवार,विद्यालय एवं समाज में रहते हुए प्रतिदिन कुछ न कुछ समस्याएं होती हैं।जिसमें से विद्यालय से संबन्धित समस्याएं हैं जैसे -प्रवेश की समस्या,पुस्तक समय से न मिलने की समस्या,पाठ्यक्रम समय से पूरा न होने की समस्या,फीस वृद्धि की समस्या,परीक्षाओं में असफलता,शिक्षकों के साथ मधुर संबंध न होने की समस्या,प्रशासनिक दबाव आदि के कारण बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में गिरावट आ रही है।आज प्रौधौगिक के युग में ज्ञानार्जन के कई ऐसे स्रोत हैं, जहां से विद्यार्थियों को पुर्व में ही पढ़ाई के अतिरिक्त ज्ञान भी मिल रहा है।इस आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अलाभकरी होता है।समाज में व्याप्त कुरीतियां,गृहकार्य का दबाव,अन्य सदस्यों की जिम्मेदारियां,बच्चों की अधिकता,आर्थिक तंगी,और कुप्रथाओं के कारण बालिकाओं की शिक्षा में बाधाएं आती हैं और शिक्षा हेतु आवेदन करने से पहले ही रोक दिया जाता है।वर्तमान शिक्षा का उपयोग व्यावहारिक जीवन में नहीं किया जा सकता है,क्योंकि यह तकनीकी ज्ञान तो दे सकती है।परन्तु व्यावहारिक जीवन जीने की कला नहीं सिखा रही है।आज विद्यार्थियों को व्यक्तिगत जीवनयापन में कठिनाई होती है।विद्यार्थियों में भविष्य की चिंता,तनाव,कुंठा, अवसाद और कुसमायोजन,असफलता का डर, प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करने की प्रतिद्वंदी भावनाएं बढ़ रही है।अभिभावक व्यस्त होने के कारण यह भूल

जाते हैं कि छात्रों को अकादमिक ज्ञान का लाभ तभी हो सकता है जब बालक व्यावहारिक जीवन में आने वाली समस्याओं, कठिनाईयों, चुनौतियां का सामना करना सीख लें।तकनीक ज्ञान के द्वारा हम भावनाओं, संवेदनाओं का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते हैं।जिसके लिए उन्हें पिता पुत्र जैसे सम्बन्ध की आश्यकता होती है।वर्तमान में अभिभावक व्यस्तता के कारण समय नहीं दे रहे हैं जिसके परिणास्वरूप उनका उचित मार्ग से भटक जाना,गलतआदतोंका शिकार होना,कुसंगति,चोरी की समस्या,शैक्षिक उपलब्धिमें गिरावट,नियमित कक्षाएं न लेना,अनुशासनहीनता करना,विद्यालय में हड़ताल करने जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।आज प्रत्येक विद्यार्थी को उस शिक्षा की आव्यकता है जो समस्या का समाधान कर सके, उन्हें रोजगारपरक शिक्षा के विषय में जानकारियां दें।स्वरोजगार के विषयों में समझ विकसित करें।उद्योंगों कारखानों में रोजगार के अवसरों की उपलब्धता के विषयों की जानकारी दे।

विद्यालय में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थी के प्रश्नों के उत्तर न देने अनावश्यक रूप से डांटना, शांत करा देना और कहना तुम्हें कुछ नहीं आता,तुम कुछ नहीं कर सकते, तुम यह कर ही नहीं सकते,तुम ऐसा कर ही नहीं पाओगे कहकर रोक दिया जाता है।इन शब्दों से विधार्थियों का मनोबल गिरने लगता है वह दुबारा प्रश्न नहीं करते और कक्षा में पीछे रहने लगते हैं, चिड़चिड़ा होना,मानसिक रोग हो जाते हैं,याददाश्त कमजोर होना,दब्बू प्रवृत्ति वाला और एकाकीपन जैसे समस्यात्मक लक्षण भी देखे जा सकते हैं।जिनके कारण विद्यार्थियों में परीक्षा का डर,बार बार कक्षा में असफल होने की समस्या, नींद ना आना, सिर दर्द होना, चक्कर आना, थकान महसूस करना, क्रोध,तनाव, चिंता, कुंठा,आक्रोश जैसी समस्या बढ़ रही हैं।विद्यार्थियों को बाल्यावस्था में सीखने-सिखाने में सर्वाधिक समस्याएं होती हैं।इस आयु में सीखने की तीव्र इच्छा होती है।विद्यार्थियों में चिंतन क्षमता, तर्क, खोजबीन,कल्पना करने, अनुमान लगाने,दिन-प्रतिदिन की समस्या समाधान की योग्यता जांचने,निर्णय लेने की क्षमता, स्वयं के विचारों और भावनाओं को व्यक्त किए जाने हेतु आवश्यक है।

आज छात्राओं को घर से निकलना सुरक्षित नहीं माना जाता है।समाज में प्रतिदिन होने वाली घटनाओं के उदाहरण ले सकते हैं जैसे सिरफिरे द्वारा परेशान करना,गलत नंबर डायल करना,गलत संदेश भेजना, दोस्ती का

दबाव भी बनाना जिसके डर से छात्र-छात्राएं शिक्षा को अधूरी छोड़ देने से ड्रॉप आउट छात्राओं का आनुपातिक स्तर बढ़ रहा है।अभिभावक अपने बच्चों की छोटी आयु में ही विवाह कर देते हैं।ऐसी सामाजिक समस्याओं के समाधान की योग्यता विकसित करने हेतु शोध कार्य की आवश्यकता है।

1.2.0 समस्या का प्रादुर्भाव

समस्या से सम्बन्धित कुछ शोध अध्ययन को पढ़ा गया जिसमें शोधकत्री के मन में कुछ प्रश्न आए और इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त नहीं हो सके इसलिए शोध अध्ययन हेतु इस विषय को चयनित किया गया है।

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय पर हुये शोध

डॉ मनीष चंद्र,(2020).ने"एकेडमिक प्रोग्रेशंस पर्सनैलिटी ट्रेट्स लोकस आफ कंट्रोल एंड इमोशनल इंटेलिजेंस कोरिलेटसऑफ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ ग्रेजुएट स्टूडेंट्स।"अध्ययन में न्यादर्श हेतु 39 कॉलेजों को सौद्देश्य नमूना चयन विधि द्वारा चयनित किया गया।1938 छात्राओं का चयन किया जिसमें से कुछ सरकारी कॉलेजों और बच्चे हुए व्यक्तिगत संस्थाओं से लिए गए 386 छात्र करीमनगर के जिसमें 197 सरकारी और 193 व्यक्तिगत संस्था से लिए गए महिला पुरुष सरकारी व्यक्तिगत संस्था से लिए गए थे।

सिंह.मीनू,(2017).ने"स्टडी ऑफ़ ऑर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट ऑफ़ कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एंड इट्स इंपैक्ट ऑन स्टूडेंट एडजस्टमेंट क्वालिटी ऑफ़ लर्निंग एंड ड्रॉप आउट रेट" जिसमें साधारण यादृच्छिक चयन विधि द्वारा 1305 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया प्रत्येक विद्यालय से 45 विद्यार्थी और 145 शिक्षकों को चयनित किया गया तथा इनके द्वारा ऑर्गेनाइजेशन क्लाइमेट को मोतीलाल शर्मा द्वारा निर्मित मापनी और समायोजन के लिए ए. के. पी. सिन्हा और आर.पी सिन्हा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया।जॉब संतुष्टि के लिए मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित मापनी को प्रयोग में लाया गया।अधिगम उपलब्धि हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। जिनके परिणाम में पाया गया कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता निम्न होती है।

डॉ.लोकनाथ मिश्रा,(2015)ने"कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय इज मोरल फॉर एनरोलमेंट ऑफ डिसएडवांटेज गर्ल्स" विषय पर अध्ययन किया।न्यादर्श हेतु इन्होंने आंध्र प्रदेश राज्य की 12 राज्य लिए जिसमें अरुणाचल प्रदेश,बिहार,गुजरात,हिमाचल प्रदेश,झारखंड,कर्नाटक,मध्य प्रदेश,उड़ीसा,राजस्थान,तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश सम्मिलित किए।न्यादर्श हेतु कक्षा 6,7,8 की प्रत्येक कक्षा से 10 छात्राओं को 25 अभिभावक,1वार्डन, 2अपूर्णकालिक शिक्षक,चयनित करने हेतु साक्षात्कार विधि,व्यक्तिगत संपर्क विधि,सामूहिक वादविवाद विधि द्वारा आंकड़े एकत्रित किए गए।इन विद्यालयों के परिणाम सकारात्मक पाए गए।इन विद्यालयों को कक्षा दसवीं से बारहवीं तक करने की मांग की गई है।

शंकर के,(2015).ने "एन इवैल्यूएशन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कूल इन तेलंगाना आंध्र प्रदेश राज्य" में शिक्षाशास्त्र विषय पर शोध अध्ययन किया न्यादर्श हेतु 39 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों से कक्षा 10 की छात्राओं को चुना गया को साक्षात्कार और सर्वेक्षण विधि द्वारा चयनित किया गया उपकरण में लिकर्ट 5 बिंदु मापनी का प्रयोग किया गया। छात्राओं का परिणाम 71.82% महिला साक्षरता दर पाई गई और विद्यालय छोड़ने वाली छात्राएं 37.20% रही।

गोगोई एंड गोस्वामी,(2015).ने इन स्टडी ऑन स्ट्रक्चर फैसिलिटी इन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय ड्रॉपआउट एंड नेवर एनरोलमेंट एडोलिसेंट गर्ल्स।विषय पर अध्ययन किया अध्ययन में प्राप्त परिणाम 4 पॉइंट 4 4.44% कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय संचालित पाए गए जबकि 55.55% विद्यालयों की इमारतों की बनाने का काम चल रहा है।

उमा देवी एल. वी कविथा किरन,(2014)ने "कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि" पर शोध अध्ययन न्यादर्श हेतु 45 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय आंध्र प्रदेश राज्य के सोद्देश्य नमूना चयन विधि द्वारा लिए तथा 2700 छात्राएं कक्षा 7, 8, 9 से यादृच्छिक विधि द्वारा ली गई थी।शोध अध्ययन के परिणाम में पाया गया औसत से अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं का % कम था औसत अंक प्राप्त करने वाली छात्राएं औसत पाई गई और औसत से निम्न स्तर की छात्राएं जिनमें से कुछ अनुपस्थित और कुछ

विद्यालय छोड़ देने वाली छात्राएं रही थी।अध्ययन के दौरान उनकी प्रगति दर खराब देखी गई परंतु उन छात्राओं को भी कक्षा में प्रोन्नत कर दिया गया था।

पतंजलि मिश्रा,(2015).ने एलीमेंट्री एजुकेशन थ्रो (KGBV) पर केस स्टडी की।जर्नल इवैल्यूएशन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नीति आयोग प्रोग्राम एवोल्यूशन ऑफ डाइजेशन ऑर्गेनाइजेशन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया।न्यू दिल्ली जून 2015

कोडीचेरला शंकर,(2015)."एन वैल्यूएशन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कूल इन तेलंगाना रीजन ऑफ आंध्र प्रदेश पर कोडिचेला शंकर(2015).ने डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन पर शोध अध्ययन किया

"एफिशिएंसी ऑफ कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV) इन आसाम ऑन एकेडमी परफॉर्मेंस चिल्ड्रन" जून 2015 एशियन जनरल ऑफ होम साइंस 10.1:161-167. ।

संजीव कुमार मिश्रा,(2012) ने"न्यू इफेक्टिवेनेस ऑफ़ कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कीम ऑन क्वालिटी ऑफ़ लर्निंग इन संबलपुर डिस्टिक पर अध्ययन किया।

आलम.के और हलदर यू.के,(2017)ने"समायोजन और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि इंटरनेशनल जनरल ऑफ एकेडमिक इनफॉर्मेटिव एंड फ्यूचरिस्टिक रिसर्च।वॉल्यूम 4(10).7894 7907

भगत,पी,(2016).ने"माध्यमिक विद्यालय के लड़के और लड़कियों के बीच समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" किया उन्होंने अपने शोध अध्ययन में बताया है कि लड़कियों का

समायोजन लड़कों की तुलना में अधिक होता है लड़कियों को भावनात्मक और शैक्षिक रूप से उनके समकक्ष साथियों की तुलना में अधिकांश समायोजित पाया गया है।

सुरेखा,(2008).ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि निजी विद्यालय के छात्र सरकारी विद्यालय के छात्रों की तुलना में बेहतर समायोजित हैं निजी विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच नकारात्मक संबंध पाए गए।

समस्या समाधान योग्यता से संबंधित हुए कुछ शोध कार्य हैं :

मनदीप कौर,(2020).ने "इफेक्ट ऑफ इंटरडिसिप्लेनरी एप्रोच ऑन एकेडमिक अचीवमेंट एंड हायर ऑर्डर थिंकिंग स्किल ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलीटेशन टू देयर इंटेलिजेंस"।प्रयोगात्मक शोध अध्ययन में नियंत्रित समूह को विशेष कौशल के माध्यम से पढ़ाया गया।प्री टेस्ट और पोस्ट टेस्ट के द्वारा अंतर देखा गया।"टी सांख्यिकी परीक्षण" द्वारा तुलना की गई। प्राप्त परिणाम से ज्ञात हुआ कि विधार्थियों को परंपरागत तरीके से किए गए शिक्षण कार्य से सामाजिक विषय को पढ़ाए जाने वाले विशेष शिक्षण कार्य का परिणाम अधिक रहा।उच्च बुद्धि समूह के औसत लाभ सामान्य शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वालों से अधिक रहे।

राजपूत,(2019).ने एफिशिएंसी ऑफ सायनेक्टिक्स मॉडल इन हाउसिंग प्रोबलम सॉल्विंग एबिलिटी टीचिंग स्किल एंड क्रिएटिविटी ऑफ यूपी टीचर विषय पर अध्ययन किया न्यादर्श हेतु B.Ed कक्षा के 120 प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया।अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग कर पूर्व व पश्च परीक्षण को 60 दिन केअंतर पर प्रशासित किया गया।सायनेक्टिक्स मॉडल द्वारा छात्राध्यापकों की समस्या समाधान क्षमता रचनात्मक कौशल का शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

खोरियाह एंड हुसमाह,(2018).ने"प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग क्रिएटिव थिंकिंग स्किल, प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किलएंड लर्निंग आउटकम ऑफ 7th ग्रेड के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। शोध अध्ययन का उद्देश्य छात्रों की समस्या समाधान क्षमता ज्ञात करना रहा। कक्षा 7 के छात्रों का रचनात्मक कौशल पता लगाना रहा जिसमें से रचनात्मक कौशल 17. 5 % समस्या समाधान कौशल का औसत का 27 % से बढ़कर 47 % और सीखने का परिणाम 13 से बढ़कर 15% पाया गया। ऐसे शोध अध्ययन द्वारा हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि इस प्रतिमान को आगे भी अन्य छात्रों को सीखने में प्रयोग किया जा सकता है।

मनप्रीत कौर,(2020).ने"इफेक्ट ऑफ एग्रेसन रिप्लेसमेंट ट्रेनिंग ऑन सोशल प्रोबलम सॉल्विंग स्किल्स सेल्फ एस्ट्रीम एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ 7th ग्रेड स्टूडेंट्स विद एग्रेसिव बिहेवियर"पर अध्ययन किया।अध्ययन हेतु कक्षा7 के 64 विद्यार्थियों को समस्या समाधान क्षमता,आत्मसम्मान और शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने हेतु

लिया गया। यह चंडीगढ़ शहर के सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत थे।अध्ययन हेतु रोशनवर्ग का आत्मसम्मान उपकरण लिया गया,समस्या समाधान परीक्षण का निर्माण किया गया और शैक्षिक उपलब्धि के लिए सेमेस्टर परीक्षा में प्राप्त अंकों को लिया।परिणाम में पाया गया कि छात्रों की समस्या समाधान क्षमतामें प्रयोग के पश्चात वृद्धि हुई।शैक्षिक उपलब्धि के परिणाम भी बेहतर पाए गए।

सिंह.नीतू,(2016)."एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ़ इंटेलिजेंस इंटरेस्ट लर्निंग स्टाइल एंड एजुकेशनल प्रॉब्लम इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंटऑफ बैकवर्ड स्टूडेंटस"पर अध्ययन किया।आगरा जिले के(के.जी.बी.वि)से न्यादर्‍श लिए जिसमें पाया गया कि विश्लेषणात्मक अध्ययन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव साकारात्मक पढ़ता है।पिछड़े वर्ग में रहने वाले सामाजिक बुराईयों, असुरक्षा, दुर्व्यवहार अत्याचार, आत्महत्या,गलत आदतों के शिकार होने वाली बालिकाओं,के मानसिक तनाव,चिंता में सार्थक होगा।कुसमायोजित,असुरक्षा और समस्या-समाधान के लिए इस शोध कार्य की सार्थकता है।वर्तमान समय में हम छत्राओं को घर से बाहर निकलने पर उनको असुरक्षित महसूस करते हैं जिसके कारण उनकी शिक्षा में बाधाएं आती हैं।प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा बालिकाओं में आत्मविश्वास,मनोबल,निडरता,निर्भीकता,निष्पक्षता और अधिकार अधिनियम के तहत आने वाली योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की समझ और नासमझ का पता करने में सार्थक होगा। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक बुराईयों, असुरक्षा, दुर्व्यवहार अत्याचार, आत्महत्या,गलत आदतों के शिकार होने वाली बालिकाओं,के मानसिक तनाव,चिंता में सार्थक होगा।कुसमायोजित,असुरक्षा और समस्या-समाधान के लिए इस शोध कार्य की सार्थकता है।वर्तमान समय में हम छत्राओं को घर से बाहर निकलने पर उनको असुरक्षित महसूस करते हैं जिसके कारण उनकी शिक्षा में बाधाएं आती हैं।प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा बालिकाओं में आत्मविश्वास,मनोबल,निडरता,निर्भीकता,निष्पक्षता और अधिकार अधिनियम के तहत आने वाली योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की समझ और नासमझ का पता करने में सार्थक होगा। है।

स्टैनले,(2014),"एकेडमिक अचीवमेंट एंड प्रोबलम सॉल्विंग एबिलिटी इन मैथमेटिकल ऑफ ए स्टैंडर्ड स्कूल" न्यादर्श हेतु पांडिचेरी के 300 विद्यार्थियों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया। छात्र-छात्राओं

का उपलब्धि, अभिप्रेरणा,और समस्या समाधान योग्यता का स्तर सामान्य था।निष्कर्ष में पाया गया कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में उपलब्धि, अभिप्रेरणा व समस्या समाधान योग्यता अधिक थी बजाय निजी विद्यालयों के।

शर्मा मनु,(2012)."इफेक्ट ऑफ म्यूजिक एनरिचमेंट प्रोग्राम ऑन एकेडमिक अचीवमेंट एडजेस्टमेंट एंड लेवल ऑफ कॉन्शसनेस ऑफ मेंटली चैलेंज्ड चिल्ड्रन"विषय पर शोध किया गया ।प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने एक ऐसा कार्यक्रम तैयार किया जिसमें विभिन्न प्रकार के गीतों का प्रयोग करके विद्यार्थियों की उपलब्धियों,सामंजस तथा चेतना के स्तर का परीक्षण करना था।परीक्षण में बनाई गई परिकल्पना निरस्त कर दी गई क्योंकि इस कार्यक्रम का शैक्षिक उपलब्धि,सामंजस तथा चेतना पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा जिससे पूर्व नियोजित परिकल्पना को स्वीकार किया गया।

पद्मनाभन,एवं राव,(2011),"कंस्ट्रक्टिवजिम अप्रोच एंड प्रोबलम सॉल्विंग एबिलिटी इन साइंस"।प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर अध्ययन करना था शोध में प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि छात्र-छात्राओं को समान रूप से समस्या समाधान योग्यता प्रभावित करती है। कंस्ट्रक्टिविज्म अप्रोच तथा परंपरागत शिक्षण के द्वारा पढ़ाए जाने वाले विद्यार्थियों में निम्न,औसत एवं उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया था।

शैक्षिक उपलब्धि पर हुऐ शोध अध्ययन

परिक,अल्का व गोस्वामी,(2017). ने"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि"पर प्रभाव का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 400 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया।जिसमें 200 सरकारी विद्यालयों से और 200 गैर सरकारी विद्यालयों से चयनित किए गए हैं।शोध अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर होता है। अर्थात सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च पाया गया।सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी अधिक समायोजित पाए

गए।माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवम् समायोजन के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया गया अर्थात जिन विधार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च पाया गया उनमें समायोजन की क्षमता उच्च पाई गई और जिन विधार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि स्तर निम्न पाया गया उनमें समायोजन क्षमता निम्न पाई गई।

शर्मा,गीता,(2017),ने"स्टडी हैबिट्स ऑफ कक्षाआठ के विद्यार्थियों पर कंपैरेटिव एनालिसिस"पर अध्ययन किया था।प्राप्त परिणामों में सभी प्रकार के विद्यालय जैसे सरकारी, गैर सरकारी विद्यालय और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ उच्च सहसंबंध होता है।सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अच्छी पाई गई बजाय निजी विद्यालयों के।

ऐसन एनजांग,(2015),ने"स्टूडेंट्स इंटरेस्ट इन सोशल स्टडीज एंड एकेडमिक अचीवमेंट इन टेरिटरी इंस्टीट्यूट इन क्रॉस रिवर एस्टेट नाइजीरिया"मैं अध्ययन किया अध्ययन के उद्देश्य सामाजिक विज्ञान में और शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में क्या संबंध होता है देखना था ।प्राप्त परिणाम में पाया गया कि भाषा विज्ञान विषय में छात्रों की रुचि उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से संबंधित है,शिक्षक विषय वस्तु को अच्छे से समझाएं ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अन्य विषय में रुचि उत्पन्न कर सकें।

आरूल,ए.एस,(2014).ने"रिलेशनशिप बिटवीन स्टडी हैबिट्स एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल"अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदतों का संबंध देखना था।निष्कर्ष में पाया गया कि अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक सहसंबंध होता है।

सेरीन, ओगज,(2011).ने " इंपैक्ट ऑफ द कंप्यूटर बेस्ड इंस्ट्रक्शनल ऑफ अचीवमेंट एंड प्रोग्राम सॉल्विंग स्किल्स ऑफ द साइंस एंड टेक्नोलॉजी स्टूडेंट्स" पर अध्ययन किया। शोध अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक विधि से न्यादर्श के रूप में 52 विद्यार्थियों का चयन किया गया।जिन्हें प्रयोगात्मक और नियंत्रित दो समूहों में बांटा गया।उपकरण के रूप में प्री टेस्ट और पोस्ट टेस्ट के आधार पर आंकड़ों का संकलन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि जिन छात्रों को कंप्यूटर आधारित अनुदेशन से पढ़ाया गया था उनकी समस्या समाधान क्षमता

सामान्य छात्रों से अधिक थी इस प्रकार कंप्यूटर आधारित अनुदेशन का शैक्षिक उपलब्धि व समस्या समाधान कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

कुशवाह सोनिया,(2009).ने स्नातक स्तर पर उनके छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतों का अध्ययन विषय पर शोध किया। न्यादर्श में 120 छात्रों का चयन यादृच्छिक् न्यादर्श विधि से किया गया।प्राप्त परिणाम में कॉलेज के छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध में छात्रों के अध्ययन आदतों में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण होता है पाया गया।

पालीवाल तथा भाटिया,(2005,),ने अध्ययन हेतु 400 छात्र-छात्राओं को चयनित किया जिसमें से 200 सामान्य बालकों और 200 शारीरिक विकलांग बालकों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया।निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि सामान्य बालकों का ग्रह शैक्षिक स्वास्थ्य समायोजन सार्थक रूप से उत्तम पाया गया। सामान्य बालकों में सार्थक रूप से अधिक शैक्षिक तथा सामाजिक प्रतिफल पाया गया।विकलांग बालकों में सार्थक रूप से अधिक आर्थिक तथा सामाजिक प्रतिपल पाया गया।मानसिक विकलांग बच्चों में संवेगात्मक प्रतिफल अधिक पाया गया।उपर्युक्त शोधों का अध्ययन करने के पश्चात मन में कुछ प्रश्न आए जो निम्नलिखित हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष प्राप्त हुआ की कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवं दिवसीय बालिका विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के सामायोजन, समस्या समाधान योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि पर कोई अध्ययन नहीं हुआ है और इस पर शोध कार्य की आवश्यकता है इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु एक बार प्रयास किए जा सकते हैं और शोध का विषय चयनित किया गया है। क्योंकि कुछ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त नहीं हो सके जैसे:-

समस्या से संबंधित शोध प्रश्न :

1. कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों की छात्राओं का समायोजन स्तर कैसा है?

2.कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन में सार्थक भिन्नता है?

3.कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समस्या-समाधान योग्यता का स्तर क्या है? दोनों में क्या भिन्नता है?

4.क्या सरकार द्वारा संचालित दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की अपेक्षा आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में समस्याओं का सामना करने की क्षमता अधिक होती है?

5.कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवं दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर क्या है? इसके मध्य क्या भिन्नता है?

इन प्रश्नों के उत्तरों को खोजने हेतु पूर्व में हुए विभिन्न शोधों का अध्ययन शोधकत्री द्वारा किया गया जिसमें शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त नहीं हो सके।इसलिए शोध कार्य करने की आवश्यकता महसूस की और इस विषय को अपने शोध अध्ययन विषय के लिए चयनित किय गया है।

1.3.0 समस्या कथन - कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं के समायोजन,समस्या समाधान योग्यता एवम् शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

1.4.0 समस्या में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

1.4.1 कस्तूरबा गांधी बालिका आवसीय विद्यालय

सर्व शिक्षा अभियान (2001) के अंतर्गत सन् (2004) में भारत सरकार द्वारा निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा हेतु कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों से है, जिन्हें ब्लॉक स्तर पर अनुसूचित जाति, जनजाति एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं की शिक्षा हेतु संचालित किया जा रहा है जिससे बालिकाओं को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो सके। बालिकाओं की शिक्षा दर में उन्नति की जा सके ।

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय ऐसे विद्यालय हैं,जिन्हें सरकार द्वारा गरीब और पिछड़े वर्गों से संबन्धित छात्राओं की शिक्षा हेतु नि:शुल्क शिक्षा देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है।इन विद्यालयों में छात्राओं को विद्यालय में ही निवास, भोजन, और चिकित्सा से संबधित सुविधाएं और पाठयक्रम सामग्री दी

जाती है। छात्राओं को कक्षा छह में प्रवेश दिया जाता है और कक्षा दस तक की पढ़ाई कर रही हैं। अब विद्यालयों में कक्षा बारह तक कि शिक्षा देने की योजना बनाई जा रही है।

1.4.2 दिवसीय विद्यालय

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दिवसीय विद्यालयों से तात्पर्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों से है। जिनमें सभी वर्गों की छात्राओं को शिक्षा दी जाती है।दिवसीय विद्यालयों में अध्यनरत छात्राएं प्रतिदिन अपने घर से विद्यालय में अध्ययन के लिए आते है और अध्ययन के पश्चात पुन: घर चले जाते हैं। इसी प्रकार से वह अपने सत्र का पाठयक्रम और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करके शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं।

1.4.3 समायोजन

सैद्धांतिक परिभाषा

न्यूमैन और न्यूमैन,(1981).ने समायोजन से अभिप्राय है जो किसी व्यक्ति के जीवन के क्षेत्र में विभिन्न जीवन साथियों के लिए, व्यवहार संगठन के लिए जिम्मेदार है, लेकिन संपूर्ण या संतोषजनक जैसा कुछ भी नहीं है, जिसे एक बार और सभी समय के लिए प्राप्त किया जा सके ।यह कुछ ऐसा है जो हमारे द्वारा निरंतर और पुनः प्राप्त किया जाता है।

लॉरेंस एस. सेफर,(1948),के अनुसार समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी प्राणी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखता है।

अमेरिकन शब्दकोश,(1959),के अनुसार"सामाजिक समायोजन शब्द का प्रयोग उस स्थान पर होता है,जहां व्यक्ति एवं पर्यावरण के मधुर संबंध होते हैं तथा उसका विश्व के साथ पारस्परिक समन्वय होता है जहां वह रहता है।"

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोधकार्य में समायोजन से अभिप्राय बालक द्वारा आश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को

प्रभावित करने वाले कारकों में संतुलन स्थापित करने से है। असंतुलन की स्थिति में अपने आपको समायोजित कर लेना ही समायोजन कहलाता है। समायोजन व्यक्ति की आंतरिक और बाहरी जगत की आवश्यकताओं में संतोषजनक संबंध स्थापित करना है। विद्यार्थियों को सभी विद्यार्थियों शिक्षकों और अन्य सहकर्मियों के साथ मधुर संबंध स्थापित करना ही समायोजन कहलाता है।मिलकर रहने वाले विद्यार्थियों में सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता अधिक होती है।

1.4.4 समस्या-सामाधान योग्यता

सैद्धांतिक परिभाषा

स्टेनले ग्रे,(1994) ने "समस्या-समाधान वह प्रतिमान है जिसमें तार्किक चिन्तन निहित होता है।"

कार्यात्मक परिभाषा समस्या समाधान योग्यता को तार्किक चिन्तन का विषय बताया है।और इसे एक प्रतिमान के रुप में माना है।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी,(2003).के अनुसार"समस्या एक ऐसी चीज है जो व्यक्ति की आवश्यकताओं के समय,मुश्किल या समझ में नहीं आती है।"

कार्यात्मक परिभाषा

विधार्थियों को कार्य करते समय आने वाली कठिनाइयों या बाधाओं को समस्या के नाम से जाना जाता है।जैसे किसी विद्यार्थी का लक्ष्य है कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करना और उसके पास पाठ्य पुस्तक नहीं है,नियमित कक्षाओं को लेनी में असमर्थ होने के साथ ही अनेक शैक्षिक समस्याएं शैक्षिक प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती हैं तो इसे शैक्षिक समस्या कह सकते हैं।इन बाधाओं के कारण उस छात्र की प्रगति में कमी आ जाती है।यदि इन समस्याओं का समाधान अपनी सूझ-बूझ,तार्किक चिंतन और बौद्धिक क्षमता के आधार पर या अन्य किसी के माध्यम से भी समस्या को हल कर ले और उच्च उपलब्धि हासिल करे तब इसे समस्या समाधान योग्यता कह सकते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि

सैद्धांतिक परिभाषा

सुपर ,(1967). के अनुसार "एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या सीखा और कितना सीखा तथा वह कोई अन्य कार्य कितनी भली भांति कर लेता है।"

एनास्तासी,(1961) के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थीयों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विधार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर आयु के अनुसार निर्धारित पाठयक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति में अभिव्यक्त होता है।जिसका परिणाम उनके वार्षिक परीक्षा में किये गए कार्यों से मिलता है।"

कार्यात्मक परिभाषा- प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उच्च प्राथमिक स्तर के छठवीं, सातवीं और आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की परीक्षा में प्राप्त हुए आन्तरिक मूल्यांकन से है विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 6 के मध्य में प्राप्त परिणामों को शैक्षिक उपलब्धि का आधार बनाया जाएगा कक्षा 7 के लिए कक्षा 6 के अंक व कक्षा 8 के लिए कक्षा 7 के अंक लेना अधिक सार्थक होगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्राओं द्वारा अर्जित किए गए सत्र के आंतरिक मूल्यांकन में प्राप्त किए गए प्राप्तांकों से है। इसी उपलब्धि के आधार पर छात्र-छात्राओं को निम्न, मध्य और उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाला घोषित किया जाता है।

1.5.0 शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. कस्तूरबा गांधी बालिका आवसीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन स्तर -का अध्ययन करना ।

2. कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समस्या-समाधान योग्यता स्तर का अध्ययन करना।

3. कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना।

4. कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के- समायोजन, समस्या समाधान योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.6.0 शोध परिकल्पना

Ho.1 कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन का स्तर सामान्य है।

Ho.2 कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

Ho.3 कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

1.7.0 शोध अध्ययन के चर

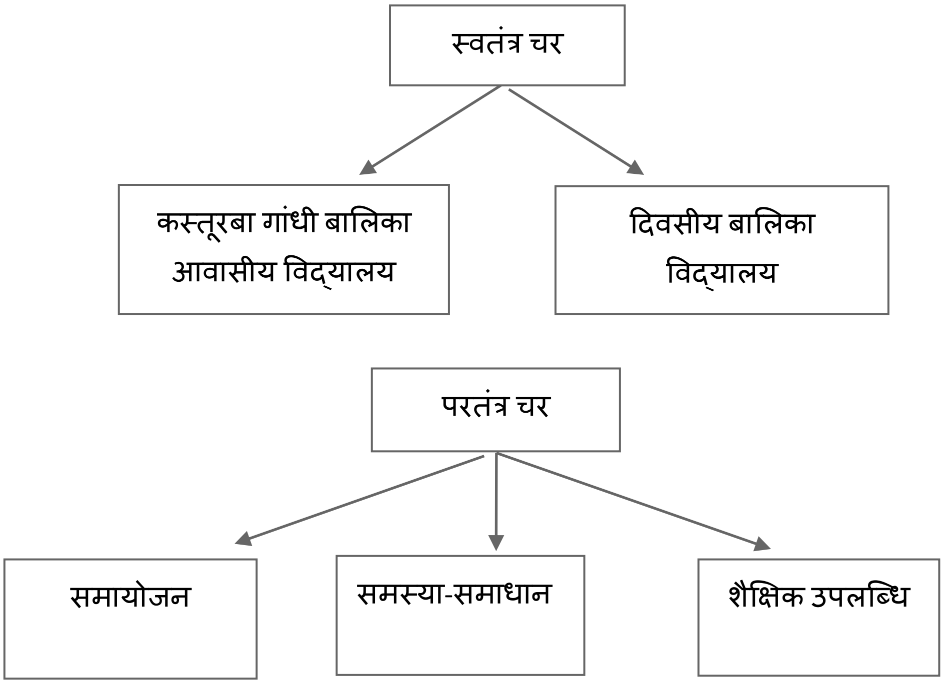

चित्र न. 1 शोध अध्ययन के चर

1.8.0 शोध अध्ययन विधि प्रस्तुत शोध अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। **जॉन डब्ल्यू बेस्ट,(1972)** के अनुसार "विवरणात्मक शोध अनुसंधान क्या है का वर्णनएवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियां अथवा संबंध जो वर्तमान में हैं, अभ्यास जो चालू है, विश्वास विचारधारा अथवा अभिवृत्तियों जो पाई जाती हैं, प्रक्रिया जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा नई दिशाएं जो विकसित हो रहीं हैं से उसका संबंध है।"विवरणात्मक अनुसंधान क्या है?कौन सी ज्वलंत समस्या है? कौन सी समस्या सामाधान योग्य है ? कौन से शोध कार्य भविष्य में होने चाहिए जो देश भर में उपयोगी हो सकते हैं।

1.9.0. न्यादर्श -

1.9.1. न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा जिले के पांच कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवं पांच दिवसीय विद्यालय का चयन सौध्देश्य नमुना चयन विधि से किया जाएगा।इन्हीं विधालयों में अध्ययनरत 600 छात्राओं का चयन साधारण याद्रच्छिक विधि से किया जाएगा।जिसमें 300 छात्राएं कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय से एवम् 300 छात्राओं का चयन दिवसीय विद्यालयों से कक्षा छः, सात और आठ की छात्राएं चयनित की जाएगी।

1.9.2. शोध में प्रयुक्त न्यादर्श

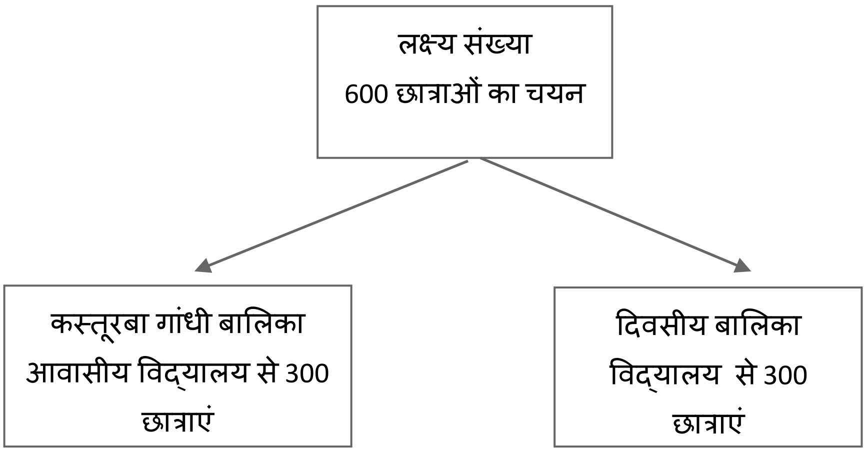

चित्र न. 2 शोध में प्रयुक्त न्यादर्श

1.9.3 न्यादर्श चयन प्रक्रिया--

सारणी 1 न्यादर्श चयन प्रक्रिया

विद्यालय	कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय से					दिवसीय बालिका विद्यालय से			
कक्षाएं	कक्षा छह	कक्षा सात	कक्षा आठ	कुल योग		कक्षा छह	कक्षा सात	कक्षा आठ	कुल योग
विद्यालय प्रथम	20	**20**	**20**	**60**		**20**	**20**	**20**	**60**
विद्यालय द्वितीय	**20**	**20**	**20**	**60**		**20**	**20**	**20**	**60**
विद्यालय तृतीय	**20**	**20**	**20**	**60**		**20**	**20**	**20**	**60**
विद्यालय चतुर्थ	**20**	**20**	**20**	**60**		**20**	**20**	**20**	**60**
विद्यालय पंचम	**20**	**20**	**20**	**60**		**20**	**20**	**20**	**60**
कुल योग	**100**	**100**	**100**	**300**		**100**	**100**	**100**	**300**

1.9.4 सांख्यिकी प्रविधियां

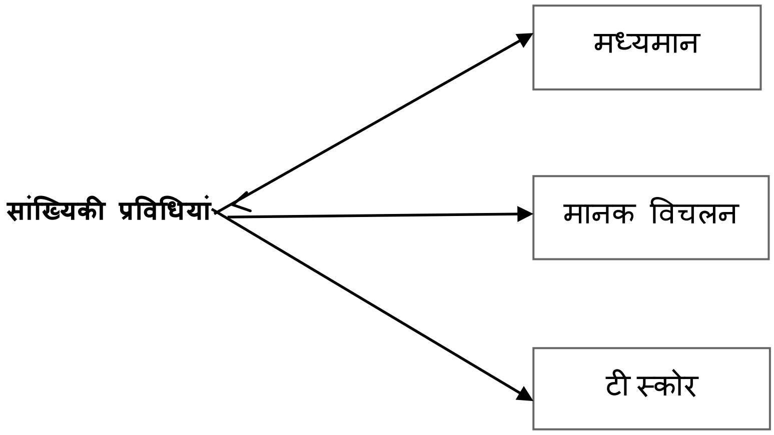

चित्र न. 3 सांख्यिकी प्रविधियां

एनोवा परीक्षण की सार्थकता

शोधार्थिनी द्वारा अपने शोध कार्य में मानकीकृत 'टी परीक्षण' को आकणों की गणना हेतु प्रयोग में लाया जाएगा।क्योंकि दोनों विद्यालय से ली गई प्रत्येक कक्षा की 20-20 छात्राओं का तुलानात्मक अध्ययन किया जाएगा।जिसके लिए यह विधि उपयुक्त होगी।'टी परीक्षण' की सहायता से दो स्वतंत्र चरों के अन्तर की गणना जाएगी।'टी परीक्षण' की गणना करके दो स्वतंत्र चरों की सार्थक भिन्नता ज्ञात की जायेगी।दिए गए सुझाव के

अनुसार शोधार्थिनी ने'एनोवा विधि' को हटा दिया गया है। अब 'टी परीक्षण' को ही सांख्यिकीय गणना हेतु प्रयोग में लाया जाएगा

1.9.5 शोध प्रारुप

प्रथम चरण में -आगरा जिले के पांच कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् पांच ही सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त दिवसीय विद्यालयों का चयन सोद्देश्य नमूना चयन विधि द्वारा किया जाएगा।

द्वितीय चरण- 600 छात्राओं को चयनित किया जाएगा।* 300 छात्राएं कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों से एवं 300 छात्राएं दिवसीय विद्यालयों से सौद्देश्य नमूना चयन विधि द्वारा से चयनित की जाएंगी।

तीसरे चरण* साधारण याद्रच्छिक चयन विधि द्वारा प्रत्येक विद्यालय से 60 छात्राएं चयनित की जाएंगी।प्रत्येक कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एवम् सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त दिवसीय विद्यालय की कक्षा 6,7और 8 कक्षा से 20-20 छात्राएं चयनित की जाएंग

1.10.0 शोध प्रारुप-

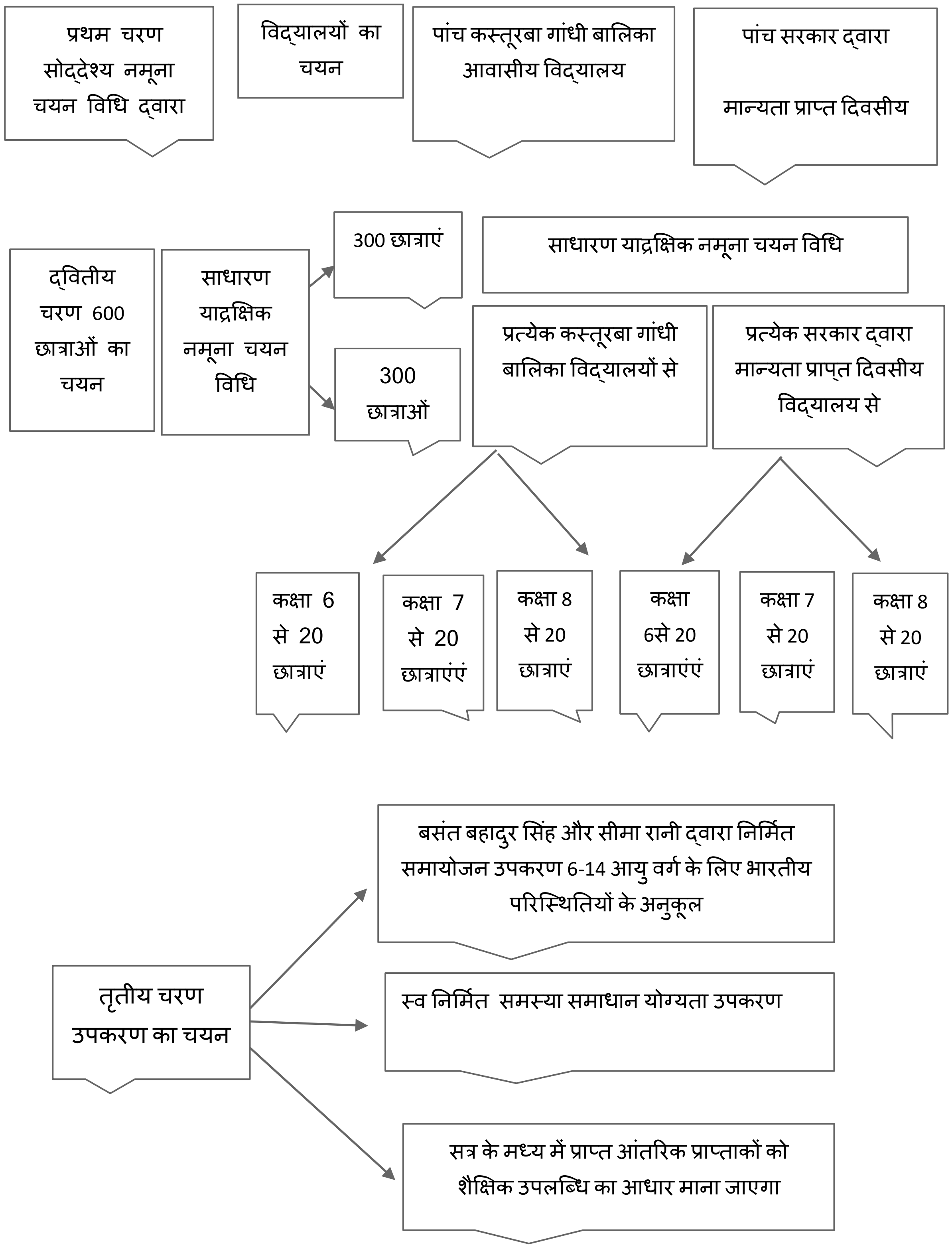

चित्र न. 4 शोध प्रारुप

1.11.0 शोध उपकरण -

शोध उपकरण में समायोजन मापन हेतु सीमा रानी एवम् बसंत बहादुर सिंह,(2008),द्वारा निर्मित एजुकेशनल इनोवेंटरी छः से चौदह वर्ष की आयु वाले विद्यार्थियों के लिए भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल निर्मित है।को प्रयोग में लाया जाएगा।

समस्या समाधान हेतु स्व निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

शैक्षिक उपलब्धि-सत्र के दौरान कक्षा में प्राप्त आन्तरिक मूल्यांकन के प्राप्तांको को शैक्षिक उपलब्धि काआधार माना जाएगा।इसकी वैधता हेतु GCAT परीक्षण प्रशासित करके जो प्राप्तांक प्राप्त होंगे वह और वार्षिक परीक्षाफल के अंको का सहसंबंध ज्ञात कर देखा जायेगा कि किसका प्राप्तांक अधिक होगें उसीको वैधता स्थापित करने हेतु लिया जाएगा। बाहा कसौटी हेतु निकस संदर्भित परीक्षण का प्रयोग किया जाएगा।विश्वसनीयता के लिए परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता स्थापित की जाएगी।

1.12.0 शोध अध्ययन की सीमाएं

1-प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा जिले के कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं पर ही किया जाएगा।

2 -प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरकार द्वारा संचालित उच्च प्राथमिक दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को न्यादर्श के लिए चयनित किया जाएगा।

1.13.0 समस्या की सार्थकता

योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की समझ और नासमझ का पता करने में सार्थक होगा। छात्राओं के समायोजन में आने वाली कठिनाईयों के समाधान में सार्थक होगा।

समस्या-समाधान योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय के वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है। नकारात्मक प्रभावों से किस प्रकार बचा जा सकता है।स्वयं को कैसे समायोजित किया जा सकता है।

सामाजिक बुराईयों, असुरक्षा, दुर्व्यवहार अत्याचार, आत्महत्या,गलत आदतों के शिकार होने वाली बालिकाओं,के मानसिक तनाव,चिंता में सार्थक होगा। कुसमायोजित,असुरक्षा और समस्या-समाधान के लिए इस शोध कार्य की सार्थकता है। वर्तमान समय में हम छत्राओं को घर से बाहर निकलने पर उनको असुरक्षित महसूस करते हैं जिसके कारण उनकी शिक्षा में बाधाएं आती हैं

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा बालिकाओं में आत्मविश्वास, मनोबल, निडरता, निर्भीकता, निष्पक्षता और अधिकार अधिनियम के तहत आने वाली योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की समझ और नासमझ का पता करने में सार्थक होगा।

1.14.0 सन्दर्भ

मनप्रीत कौर,(2020),इफेक्ट ऑफ एग्रेसन रिप्लेसमेंट ट्रेनिंग ऑन सोशल प्रोबलम सॉल्विंग स्किल्स सेल्फी स्ट्रीम एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ 7th ग्रेड स्टूडेंट विदएग्रेसिव बिहेवियर ।

सचिन कुमार(2020),एंड एनालिसिस ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट एंड काइनेटिक इंटेलिजेंस ई ऑफ स्कूल चिल्ड्रन। पंजाब यूनिवर्सिटी

राजपूत,(2019),एफीकेसी ऑफ सायनेक्टिक्स मॉडल इन हैंगिंग प्रोबलम सॉल्विंग एबिलिटी टीचिंग स्किल एंड क्रिएटिविटी ऑफ टीचर।

स्टैनले,(एस.लि.ओ.(2019)."अचीवमेंट मोटिवेशन एंड प्रोबलम सॉल्विंग एबिलिटी इन मैथमेटिक्स नाइंथ स्टैंडर्ड स्टूडेंट्स" ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, ए.(3) 335-36।

खोरियाह एंड हुसामाह,(2018),"प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग क्रिएटिव थिंकिंग स्किल प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स एंड लर्निंग आउटकम ऑफ सेवंथ ग्रेड स्टूडेंट।

मुइन.ए.हनीफा.एस.एच.&डिविडियन.एफ.(2018),जनवरी,"इफेक्टऑफ क्रिएटिव ऑन स्टूडेंट्स मैथमेटिकल एडाप्टिव रीजनिंग इन जनरल ऑफ फिजिक्स कॉन्फ्रेंस सीरीज।"वॉल्यूम 948.(1)पे.न.012001आई.ओ.पी पब्लिशिंग।

वांग,टी.टी.वाई.(2018),"इज कंडीशनल रिजनिंग रिलेटेड टू मैथमेटिकल प्रॉब्लम्स सॉल्विंग डेवलपमेंटल साइंस।" 2,(1)12644,।

आलम,के.और हलधर यू.के,(2017),माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि।"इंटरनेशनल जनरल ऑफ इनफॉर्मेटिव एंड फ्यूचरिस्टिक रिसर्च, 4,(10).78-94,7907।

सिंह मीनू.(2017),"ए स्टडी ऑफ ऑर्गनेशनल क्लाइमेट ऑफ कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय एंड इट्स इफेक्ट ऑन स्टूडेंट एडजस्टमेंट क्वालिटी ऑफ लर्निंग एंड ड्रॉपआउट रेट" ।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय इज ए मॉडल फॉर एनरोलमेंट ऑफ डिसएडवांटेज गर्ल्स 31 जनवरी जून 2015 2455-5005।

कोडीचेरला शंकर,(2015),"एन इवैल्यूएशन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय इन तेलंगाना रीजन ऑफ आंध्र प्रदेश"।

डॉ लोकनाथ मिश्रा,(2015),"कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय एग्जाम मोरल फॉर एनरोलमेंट ऑफ दिस एडवांटेज गर्ल्स 31 जनवरी जून 2015 2455 055

कोडीचेरला शंकर,(2015)."एन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कूल इन तेलांगना रीजन ऑफ आंध्र प्रदेश।"

एफिशिएंसी ऑफ़ कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय इन आसाम स्टडी ऑन एकेडमिक परफॉरमेंस चिल्ड्रन जून,(2015).एशियन ऑफ होम साइंस।

गोगोई एंड गोस्वामी,(2015).ने इन स्टडी ऑन इंफ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटी दिन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय फॉर ड्रॉप आउट एंड नेवर एनरोलमेंट एडोलेसेंट गर्ल्स।

शंकर के,(2015).ने इवेल्यूएशन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कूल इन तेलंगाना आंध्र प्रदेश।

मनीषा शंकरराव राठौड़ सुनीता पवार अशोक,(2011)ने स्टडी ऑफ हाई स्कूल अंदर द कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कीम इन महाराष्ट्र ड्राइव एंड डाउन इकोनॉमिक

उमा देवी एल वी कविथा किरण,(2014) में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया।

संजीव कुमार मिश्रा,(2012).इफेक्टिव ने ऑफ कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्कीम ऑन क्वालिटी ऑफ लर्निंग इन संबलपुर डिस्ट्रिक्ट।

इवोल्यूशन स्टडी ऑन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नीति आयोग प्रोग्राम इवोल्यूशन ऑर्गनाइजेशन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया न्यू दिल्ली जून (2015)।

बैक.केरलाइन.(2017),"स्टडीऑफ वैल्यूज.सोशल बिहेवियर एडजेस्टमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन ऑफ द स्टूडेंट्स बिलॉन्गिंग टू ऑफांजर्स।" 10603,185670.।

बर्डशॉ,जेड,हर्जेल,(2017)."डेवलपिंग प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स इन मैथमेटिक्स लेसन स्टडी इंटरनेशनल जनरल लेसन एंड लर्निंग स्टडीज"6(132-44।

सिंह,प्रेमपाल,(2017),माध्यमिक विद्यलयों में अध्ययनरत विद्यार्थियो के समायोजन एवम् शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन।जर्नल ऑफ सोशिओ एजुकेशन एंड कल्चरल रिसर्च, वॉल्यूम 3 (7),जुलाई- दिस.(2017),पे. न.93-96।

जामली डी. मोहम्मद, एच, अब्दुल्लाह जेड जैद एन एम एवं आरएस बी,(2017),"फॉरेस्ट इन हायर ऑर्डर थिंकिंग एंड प्रोबलम सॉल्विंग इन एबिलिटी स्किलस थ्रो सोशल मीडिया" मेन इन इंडिया"97(2,1-10),।

भगत,पी.(2016),"माध्यमिक विद्यालय के लड़के और लड़कियों के बीच समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"अंतरराष्ट्रीय जनरल ऑफ़ अप्लाइड रिसर्च।" 7 पे 91-95।

जोगी,ए.एंड.कीकस,(2016),"कैलकुलेशन एंड वर्ड प्रोबलम सॉल्विंग स्किल्स इन प्राइमरी ग्रेड्स इंपैक्ट ऑफ़ कॉग्निटिव एबिलिटी एंड इमोशनल इंटरनेशनल विद टास्क प्रसिस्टेंट बिहेवियर ब्रिटिश जनरल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी" 86,2. ए, पे.165-185 ।

भगत,पूजा,(2016),"कंपैरेटिव स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल व्यास एंड गर्ल्स इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ अप्लाइड रिसर्च,2(7 91-95

भाट,एम.ए.(2016)."दी प्रिडिक्टिव पावर ऑफ रीजनिंग एबिलिटी ऑन एकेडमिक अचीवमेंट इंटरनेशनल जनरल ऑफ लर्निंग टीचिंग एंड एजुकेशनल रिसर्च",15 पे 1।

सिंह,नीतू.(2016),ने"एनएनालिटिकल स्टडी ऑफ इंटेलिजेंस इंटेलिजेंस इंटरेस्ट लरनिंग स्टाइल एंड एजुकेशनल प्रॉब्लम इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ बेकवर्ड स्टूडेंट्स।

सिंह,जी,(2015).ने"भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच समायोजन"अंतरराष्ट्रीय जनरल हॉल के वैज्ञानिक अनुसंधान के वो,6.,(12।

डोंगरे,एंड,पटेल,आर.(2015)."डेवलपमेंट ऑफ प्रॉबलम सॉल्विंग स्किल ऑफ एडोलिसेंट थ्रो टीचिंग एंडसाइंस फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट"आई,ओ,एस,आर-जे,एच,एस,एस"20(746-52।आई.एस.एस.एन।" 2279-0845।

साधना,श्रीराम,यादव,(2015).ने"माध्यमिक स्तर के अध्ययन में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से मूल्य निर्धारण भूमिका का उपलब्धि ए व्यक्तित्व समायोजन हुए सामाजिक पर्यावरण"पर अध्ययन झुंझुनू राजस्थान, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल ट्रैवल ट्राइबल विश्वविद्यालय विद्या नगरी झुंझुनू राजस्थान।"

राठौर,योगिता,एंड.मिश्रा,(2015)."ए कंपैरेटिव स्टडी आफ एडजेस्टमेंट एंड सोशल इंटेलिजेंस ऑफ अर्बन हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टो देयर जेंडर"। इंटरनेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट। 2(2(14 9-151 ।

अग्रवाल,माधवी,और ड्यूटिया,कु.अनिल,(2015).एकेडमिक अचीवमेंट एंड सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ सेकेंडरी लेवल स्टूडेंट्स।"इंटरनेशनल जनरल एजुकेशन एंड रिसर्च जनरल। 1(3 26-33।

परमार रजनीकांत एंड एन.,(2014),स्टडी ऑफ एरिया ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू हैबिट"।इंटरनेशनल जनरल फॉर टेक्नोलॉजिकल रिसर्च इन इंजीनियरिंग",6 403-406।

वंदना.सी.(2013),"दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के समायोजन।" पर एक अध्ययन ओ एस आर जनरल ऑफ रिसर्च एंड मेथड्स इन एजुकेशन (1),50-52।

राजऋषि,(2013),ने" महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य जीवन संतुष्टि एवं समायोजन पर जीवन मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन।डी. ई.आई आगरा।

माथुर,रश्मि,डॉ.शोभा गोलवारकर,(2013),"ए कंपैरेटिव स्टडी ऑफ इंपैक्ट एजुकेशन स्टेट एंड जेंडर ऑन एडजस्टमेंट ऑफ एडोलसेंट स्कूल गोइंग ट्राईवल स्टूडेंट्स इन राजस्थान एंड गुजरात।"मेवार यूनिवर्सिटी।

शर्मा,मनु,(2012),"इफेक्ट ऑफ म्यूजिक एनरिचमेंट प्रोग्राम ऑन एकेडमिक अचीवमेंट एडजस्टमेंट एवं लेवल ऑफ कॉन्शसनेस ऑफ मेंटली चैलेंज्ड चिल्ड्रन।

ज्योत्सना,के.शाह,(2012),"स्टडी ऑन सोशल मैच्योरिटी स्कूल एडजस्टमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट एंड रेजिडेंशियल स्कूल गर्ल्स डेट ऑफ़ अप्लाइड साइकोलॉजी गुरु जंभेश्वर यूनिवर्सिटी आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी।" हिसार इंडिया जनरल ऑफ़ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस 3(7 6 9-80।

पद्मनाभन एवम् राव,जुवली एंड रौ.पी.युगल,(2011),"कंस्ट्रक्टिव अप्रोच एंड प्रोबलम सॉल्विंग एबिलिटी इन साइंस" जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च।" 28((1 546- 570।

सिंह,अरुण कुमार,(2009)"मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां।"दिल्ली प्रकाशन। आई. एस. एस.एन न.978-81-208-2410-2।

प्रो"एस.पी.गुप्ता.डॉ.अल्का गुप्ता,(2008).ने"आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन आई .एस.बी.एन 81-86204-07-7। अलाहाबाद प्रकाशन।

शर्मा, आर,ए,(2006),"शैक्षिक अनुसंधान मेरठ आर.लाल बुक डिपो।

गंगाराम,भार्गव विवेक,शर्मा मुकेश,(2005)"मनोविज्ञान अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया,।आई एस एस एन 81-86204-07-5 ।

क्युरी,आर.(2004)"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन,।"द जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च" वॉल्यूम न.(-99)न 4- हेद्रफ पब्लिकेशन।